

क्र. ७

मराठी

हिंदी- गद्य- पद्यमय

गद्य

गद्य.



इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळें.

हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :-

ग्रंथ क्रमांक ४४/१ (७६०)

ग्रंथ नाम अविताश.

विषय गद्य.

1

246



राजवाडे

सिद्धि

हयः जन्म रही तहयेः वाकुं छ हे सोप मेश्वर क ह
येः अगम हयेः अगा दहयः अरुप हयेः वाके का
ल ना हीः रुप ना हीः रेखा ना हीः दुर हये ना ह
की गम ना हिः ब्र हये दुर हयेः कक्के सन मुख
हयेः गुरु की गम हयेः जो त अरुप हे अंत पार ना
हीः अ पार हयेः ती ह स द्व ना पर च्या गुरु व च
न हयेः आपक हे ता हयेः ॥ ईती श्री बीज पुराण
अत्म ज्ञानी जीवन मुक्ते अ बीना सि द ता त्रयो
वाच ॥१२॥ श्री अ बी ना सी ये वा च ॥ ली खी तं ग्रा
नी को काल पत्र ॥ १॥ द ता त्रयो आवी ॥ सी के
सं वा द ॥ संपुर्ण मस्तु ॥ सु वां क व तु ॥
गपं न म ॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥

तो नीरंजन बलख मां होताः ॥६॥ दत्तात्रय वाच ॥
श्यामी मन का जीव कवनः पवन का जीव कवनः
सह का जीव कवनः शान का जीव कवनः सीव
का जीव कवनः काल का जीव कवनः सुन्य का
जीव कवनः जीव का जीव कवनः नीरंजन का
जीव कवनः ब्रह्म का जीव कवनः ॥७॥ अवीना
सीयो वाचः ॥ सुन्य का जीव अनुपमोः काल का
जीव सुन्यः जीव का जीव सीवः सीव का जीव
नीरंजनः नीरंजन का जीव नीरंकारः ॥८॥ श्री
दत्तात्रयो वाच ॥ कांहाची उपन्यो जीवः कांहा
ची उपन्यो सुन्यः कांहाची उपन्यो काळः कांहा
ची उपन्यो हंसः कांहाची उपन्यो ब्रह्मः ॥१॥

॥२॥

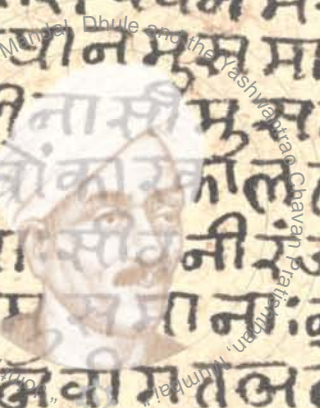
3

॥२॥

होता हंसः कमलन होता तो कां हा होता कालः
यान होती तो कां हा हा ता जीवः चंद्रन होता तो कां
हा हा ता सीवः सुष्मि पान होता तो कां हा हा ता नी
रंजनः ॥५॥ श्रीबहीना सीयो वाचः ॥ ही र्दान हो
ता तो मन अनोपमा होताः ना नीन हो ति तो प व
न नी रा कार मा होताः अन ह द न होता तो स ह्वं
कुं र मुं होताः नी रंजन न होता तो प्रा न अ वि ग त
मा होताः ब्रह्मांड न होता तो ब्रह्म जो ति श्च रूप मा
होताः गगिन न होता तो हंस अ वी णा सी मो होताः
कमल न होता तो काल सुं न्य मां होताः चंद्रन हो
ता तो सी व नी रंजन मुं होताः सुष्म पान हो ति

वकां हासमानाः नीरंजनकां हासमानाः ॥११॥
श्रीलवीनासीयोवाच ॥ तनच्छुटे मनजोतमो
समानाः तनच्छुटे श्वासपवनमस्मानाः पवन
सहस्रं समानाः सहस्रान्मुसमानाः ब्रह्महंस
मुसमानाः हंसलवीनासीमुसमानाः कालहं
समुसमानाः हंसकोकालहंसमुसमानाः ॥३॥
जिवसीवमुसमानाः सीवनीरंजनमुसमानाः
नीरंजननीराकारमुसमानाः नीराकारभा
वीगतमोसमानाः लवीगतलेखमुसमा
नाः बेहदलविनासीमुसमानाः लवीनासी
लवीगतमुसमानाः लपंगव्यापकनाहीः ताके
गवननाहिः ग्रहनाहीः गावंनाहीः सद्धरहीत

३॥



(6)

कां हाची उपन्यो स द्वः कां हाची उपन्यो मनः कां
हाची उपन्यो पवनः ॥ था बा बी ना सी यो वा च ॥
अनकोची उपन्यो नीरंजनः नीरंजनची उपन्यो
सीवः सीवची उपन्यो जीवः जीवची उपन्यो का
लः वंकारची उपन्यो सुंन्यः असीना सीची उ
पन्यो हंसः जोतची उपन्यो ब्रह्मः अवगतची उ
पन्यो प्रानः प्रानची उपन्यो मनः मनची उपन्यो
स द्वः सक्तीची उपन्यो सप पवनची उपन्यो सा
सः ॥ १० ॥ श्री दत्तात्रयो वाच ॥ तन छुटे मनकां हा स
मानोः पवनकां हा स मानोः हंसकां हा स मानोः
कालकां हा स मानोः स द्वकां हा स मानोः प्रान
कां हा स मानोः सुंन्येका जीवकां हा स मानोः सी



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com